बाइबल टीचर

वर्ष 15 सितम्बर 2018 अंक 10

सम्पादकीय

मेरी याद में

हम अपने जीवन में कई लोगों को याद करते हैं। कई बार किसी की तस्वीर को देखकर और कई बार उनकी कुछ वस्तुओं को देखकर हम उन्हें याद करते हैं। ताजमहल को देखकर पता चलता है कि शाहजहान ने अपनी पत्नी मुमताज़ की याद में यह स्मारक बनाया था।

प्रभु यीशु मसीह जो कि आदि से वचन के रूप में परमेश्वर के साथ था ताकि सारे जगत के पापों के लिये अपने प्राण को बलिदान करे। एक बहुत बड़ा बलिदान परमेश्वर ने यीशु के रूप में इस संसार को पापों से छुड़ौती देने के लिये दिया। (यूहन्ना 3:16) बाइबल हमें बताती है, ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा'' (रोमियों 5:8)। प्रेरित पौलुस कहता है, ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाये'' (2 कुरि. 5:21)।

यीशु ने अपनी मृत्यु से पहिले अपने चेलों के साथ एक भोज में भाग लिया था। उसने अपने चेलों से कहा था मेरी याद में तुम ऐसा करते रहना जब तक मैं वापस न आऊं, हम इसके विषय में बाइबल में पढ़ते हैं कि, ''जब वे खा रहे थे तो यीशु ने रोटी ली, और आशिष मांगकर तोड़ी और चेलों को देकर कहा, लो खाओ; यह मेरी देह है। फिर उसने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया और उन्हें देकर कहा, तुम सब इसमें से पिओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहु है जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।'' (मत्ती 26:26-28)।

यीशु ने अपनी मृत्यु से पहिले अपने चेलों के साथ भोजन की स्थापना की थी। इस भोजन का मुख्य उद्देश्य था कि लोग प्रभु यीशु की मृत्यु और बलिदान को हमेशा याद रखें। क्योंकि मनुष्य अक्सर भूल जाता है, इसलिये यह एक यादगारी है जिसे यीशु ने अपने लोगों के लिये छोड़ा था। बाइबल हमें बताती है यह यादगारी उनके लिये है जिन्होंने प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया और वे लोग इसके राज्य अर्थात उसकी कलीसिया में है। जिन्होंने नया जन्म प्राप्त किया है वे इसमें भाग लेते हैं। कोई यदि उसके राज्य या कलीसिया में नहीं है तो उसे इसमें भाग लेने से कोई लाभ नहीं होगा। (यूहन्ना 3:3-5)। क्योंकि मसीही लोग जब इसमें भाग लेते हैं तो वे उसके लोहू के महत्व को दिखाते है। क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें उसके लोहू

से खरीदा गया है। (1 कुरि. 10:16)। यदि किसी ने यीशु की मृत्यु की समानता में बपतिस्मा नहीं लिया है तो उसे इसमें भाग लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। (रोमियों 6:3-5)।

जब हम बार-बार प्रभु भोज में भाग लेते हैं तब हम यह जान पाते हैं कि यीशु की मृत्यु हमारे लिये कितनी महत्वपूर्ण है। यीशु की मृत्यु उसका बलिदान तथा उसके लोहू के बिना हमें पापों से आजादी नहीं मिल सकती। (1 पतरस 2 : 24, 1 यूहन्ना 4:8-10; रोमियों 5:9)। मसीह की कलीसिया की स्थापना होने के पश्चात चेले प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन अर्थात रविवार के दिन इसमें भाग लिया करते थे। (प्रेरितों 20:7) कई लोग यह विश्वास करते हैं कि इसमें कभी कभार भाग लेना काफी है। परन्तु बाइबल ऐसी शिक्षा नहीं देती। प्रभु भोज किसी रीति-रिवाज पर नहीं लिया जाता। कई लोगों का ऐसा विचार है कि यह कोई पवित्र भोजन है इसलिये यदि किसी स्त्री या पुरुष के साथ कोई शारीरिक समस्या है तो उसे इसमें भाग नहीं लेना चाहिए। यह एक गलत धारणा तथा अनुचित शिक्षा है। मुझे यह बात समझ में नहीं आती कि क्यों लोग अपनी तरफ से लोगों को घुमा-फिराकर शिक्षा देते हैं। अनेकों लोग पुराने नियम की शिक्षाओं को नये नियम के साथ जोड़कर गलत बातें सिखाते हैं। प्रेरित पौलुस कहता, है कि प्रभु भोज का अर्थ क्या है, ''वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं? इसलिये कि एक ही रोटी है सो हम भी जो बहुत हैं, एक देह है: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं। (1 कुरि. 10:16) पहिली शताब्दी के मसीही प्रत्येक रविवार के दिन इसमें भाग लिया करते थे क्योंकि वे इसके महत्व को अच्छी तरह से समझते थे। (प्रेरितों 2:42 तथा प्रेरितों 20:7)।

यीशु की इस बात को याद करें जब उसने कहा था ''मेरी याद में ऐसा किया करो।'' पौलुस 1 कुरि. 11:23-26 में प्रभु भोज के विषय में कहता है, ''क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची, और मैंने तुम्हें भी पहुंचा दी, कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली। और धन्यवाद करके, तोड़ी और कहा कि यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये है मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है जब कभी पिओ तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। एक बात हमें ध्यान में रखनी चाहिए कि प्रभु भोज उनके लिये है जिन्होंने बपतिस्मा लिया तथा प्रभु की देह अर्थात कलीसिया के सदस्य है। जो व्यक्ति कलीसिया का अंग नहीं है, उसे प्रभु भोज में भाग लेने से कोई लाभ नहीं होगा यानि उसके लिये इसका कोई अर्थ नहीं है।

अब यह जानना भी आवश्यक है कि प्रभु की मृत्यु को किस तरह से याद किया जाए। प्रभु भोज में भाग लेते समय हमें बड़े आदर के साथ बैठना चाहिए। बच्चों को अनुशासन में रखना चाहिए। क्योंकि बाइबल कहती है, ''जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो। इसलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाये/या उसके कटोरे में से पीये तो वह प्रभु की देह और लोहु का अपराधी ठहरेगा (1 कुरि. 11)

क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु का जब तक वह न आये प्रचार करते हो इसलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाये, या उसके कटोरे में से पिए, वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिये मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए और इस कटोरे में से पिए। क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने वह इस खाने-पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।'' (1 कुरि. 11:23-29) बाइबल के इन पदों में बड़े ही स्पष्ट से बताया गया है कि, प्रभु भोज क्या है? यह कोई रीति रिवाज़ पर आधारित नहीं है। प्रभु ने कहा था, ''मेरी याद में ऐसा किया करना।''

प्रभु भोज को हमें आदर देना चाहिए। क्योंकि प्रभु की मृत्यु हमारे लिये बहुत महत्व रखती है।

क्या मसीह का मरना आवश्यक था?

सनी डेविड

मित्रो, आज मैं सबसे पहले आपको एक घटना के बारे में बताना चाहता हूं, जो कुछ ही समय पूर्व मिसर देश के एक गांव में घटी थी। सुबह का समय था और गांव में बहुत से लोग बाहर अपने-अपने कामों में लगे हुए थे। कि तभी, अचानक एक किसान के 18 साल के लड़के ने देखा कि उसकी एक मुर्गी कुएं की तरफ दौड़ी चली जा रही है। उसे बचाने के लिये वह लड़का कुएं की ओर दौड़ा पर उसका पैर फिसल गया और वह कुएं में गिर पड़ा। थोड़ी ही दूर पर उसके दो भाई और एक बहन खड़े थे, जिनकी आयु 14 और 16 और बीस वर्ष की थी, वे सब भी उसी कुएं की ओर अपने भाई को बचाने के लिये दोड़े और एक के बाद एक उसी तरह से कुएं में गिर पड़े। तभी उनके दो पड़ोसियों ने जब यह दृश्य देखा तो वे भी कुएं की तरफ लपके और उन्हें बचाने की कोशिश में वे दोनों भी कुएं में गिर पड़े। समाचार-पत्र के अनुसार, थोड़ी ही देर में गांववालों ने पुलिस को बुलवाया और उन्होंने आकार उन 6 शवों को कुएं में से बाहर निकाला। पर इस दुखद घटना के बीच ही यह देखकर उन्हें बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि जिस मुर्गी को बचाने के लिये उन 6 लोगों की जानें चली गई थी वह उस कुएं में जिन्दी तैर रही थी। पर यह एक बात वास्तव में गौर तलब है कि उन सब लोगों ने अपनी जानें इसलिये दे दी क्योंकि वे एक दूसरे से सहानुभूति रखते थे, उन्हें एक-दूसरे से प्रेम था। वह लड़का उस मुर्गी को बचाने के प्रयास में मारा गया। और उसके भाई बहन अपने भाई। को बचाने के प्रयास में मारे गये। और इसी तरह से उन दो पड़ोसियों ने उन सबको बचाने के प्रयास में अपने प्राणों को खो दिया।

ऐसे ही, कुछ समय पूर्व मैंने एक और घटना के बारे में भी पढ़ा था। उस घटना में मैने दो छोटे लड़कों के बारे में पढ़ा था, जिनका घर रेल की पटरी के किनारे बना

हुआ था। एक दिन वे दोनों रोजाना की तरह खेल रहे थे कि अचानक दोनों किसी बात पर लड़ने लगे। और देखते ही देखते, लड़ते-लड़ते वे दोनों रेल की पटरी के बीचों-बीच आ गए। तभी उनकी माँ ने, जो घर के बाहर आंगन में झाड़ू लगा रही थी, दूर से आती रेल की सीटी सुनी। उसने दोनों लड़कों को डांटकर लड़ने को मना किया और चेतावनी देकर कहा, कि रेल की पटरी से दूर हट जाएं क्योंकि रेल आ रही है। पर वह दोनों लड़ने में ऐसे व्यस्त थे, कि उन्होंने अपनी माँ की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। पर तभी माँ ने देखा कि सीटी बजाती हुई गाड़ी उनके बहुत पास आ रही है। वह चिल्लाती हुई उस ओर दौड़ी, और उसने उन दोनों को धक्का देकर रेल की पटरी से बाहर फेंक दिया। पर ऐसा करते हुए वह स्वयं पटरी के बीचों-बीच गिर गई। और इससे पहले कि वह संभलकर उठे, कुछ ही क्षणों में रेल गाड़ी उसके ऊपर से निकलकर चली गई। उस माँ ने अपने बच्चों को बचाने के लिये अपनी जान दे दी, क्योंकि वह अपने बच्चों से प्रेम रखती थी। उसे अपने प्राणों से अधिक चिंता अपने बच्चों के प्राणों की थी।

वास्तव में इस तरह के कई और उदाहरण भी दिए जा सकते है। और जब हम ऐसी घटनाओं पर ध्यान करते हैं, तो हमें अवश्य ही ऐसे लोगों के बारे में सोचने का बाध्य होना पड़ता है जिन्होंने अपने प्राणों की चिंता न करके अन्य लोगों को बचाने के लिये अपने प्राणों को दांव पर लगा दिया था और जब हम ऐसे लोगों के बारे में सोचते हैं, तो हमारा ध्यान अवश्य ही गांधी जी की तरफ भी जाता है। गांधी जी अपने देश से और अपने देशवासियों को ऐसा अधिक प्रेम करते थे कि अपने देश को आजादी दिलवाने के लिये उन्होंने अपनी वकालत छोड़ दी थी जिस से वे उस समय भी लाखों रुपए कमाते थे। वे जेल गए, उन्होंने मार खाई और भूख और प्यास सही; और सब कुछ का सामना करके अपने देश को आजाद करवा के ही छोड़ा। पर इसी संदर्भ में उन्हें अपने प्राणों को भी खोना पड़ा। आज गांधी जी को हम इस बात के लिये याद करते है। हम में से बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्होंने गांधी जी को नहीं देखा था और बहुत से तो उस समय पैदा भी नहीं हुए थे। पर जो कुछ हमने गांधी जी के बारे में सुना है; और जो कुछ पढ़ा है और जो कुछ जाना है, उस सबसे हम यह निश्चित रूप से जानते हैं कि गांधी जी ने हम सब देशवासियों के लिये कितना बड़ा काम किया था।

पर इस लेख में हम उस व्यक्ति के बारे में देखते हैं, जिनका नाम यीशु मसीह था। क्या आप जानते हैं कि यीशु मसीह कौन था? यीशु मसीह को बाइबल में परमेश्वर और परमेश्वर का पुत्र कहकर भी समबोधित किया गया है। परमेश्वर इसलिये, क्योंकि वह आदि से परमेश्वर के साथ था, लिखा है कि, आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। और वही वचन परमेश्वर की सामर्थ से एक मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आ गया था। (यूहन्ना 1:1, 14)। पर क्या आप जानते हैं कि वह पृथ्वी पर क्यों आया था? हम पढ़ते हैं: ''क्योंकि जब हम निर्बल हो गए थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई

मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।'' (रोमियों 5:6-8)।

परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था। और वह पृथ्वी पर केवल एक ही उद्देश्य को लेकर आया था। और उसका उद्देश्य था सारे जगत के पापों के लिये मरना। परमेश्वर ने इंसान को बनाया है। पर वह जानता है, कि जमीन पर हर एक इंसान पाप के वश में है। और वह जानता है कि पाप हर एक इंसान को नरक की ओर ले जा रहा है। पर क्योंकि वह हर एक मनुष्य का आत्मिक पिता है; इसलिये वह नहीं चाहता कि किसी भी इंसान की आत्मा पाप के कारण नरक में जाए। सो वह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था। क्योंकि मनुष्यों में तो सभी पापी है। इसलिये कोई भी अधर्मी अन्य लोगों के अधर्मों का प्रायश्चित करने के योग्य नहीं था। पाप के बिना, धर्मी केवल परमेश्वर है। इसलिये उसी को स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आना पड़ा था। और उसने अपनी योजना को सफल बनाने के लिये अन्य मनुष्यों को ही इस्तेमाल किया था। जब वह पृथ्वी पर आया था, तो सबसे पहले उसने अपने लिये बारह चेलों को चुना था। उसने उन्हें परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा दी थी। उसने उन्हें सिखाया था, कि वह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था। और वह परमेश्वर का पुत्र था, और वह मार्ग और सच्चाई और जीवन था, और जो कोई भी परमेश्वर के पास स्वर्ग में जाना चाहता है वह उसी के द्वारा परमेश्वर के पास जा सकता है। अपने उन्हीं चेलों के सामने यीशु मसीह ने उन्हें यह विश्वास दिलाने के लिये की वास्तव में वह परमेश्वर का पुत्र है, सामर्थ के बड़े-बड़े काम किए थे और जब समय पूरा हुआ था, तो परमेश्वर ने कुछ लोगों को यीशु के शत्रुओं के रूप में उसके सामने लाकर खड़ा कर दिया था। उन लोगों ने यीशु का विरोध किया था, और उस पर झूठे दोष लगाए थे। और परमेश्वर ने उन्हीं लोगों के द्वारा अपनी एक महान योजना को सफल बनाया था। यहां तक, कि वहां के सबसे बड़े अधिकारी को भी बात समझ में नहीं आई थी, कि यीशु मसीह कहलाने वाले उस व्यक्ति को वहां के सरकारी नियमों के अनुसार क्रूस पर चढ़कर एक अपराधी की तरह मौत की सजा क्योंकर दी जाए। क्योंकि उसने ऐसा तो कुछ भी नहीं किया था।

बाइबल में लिखा है, कि मसीह परमेश्वर की इच्छा से और उसके होनहार के ज्ञान के अनुसार, सारे जगत के पापों के लिये मारा गया था। वह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। उसके ऊपर परमेश्वर ने सारे जगत के पापों को लाद दिया था। वह पृथ्वी पर हर एक पापी के स्थान पर, परमेश्वर की इच्छा से क्रूस पर लटकाकर मारा गया था। वह मारा गया था, ताकि उसके मारे जाने से, हमें जीवन मिल जाए। वह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था, ताकि उसके द्वारा हम स्वर्ग में जाने के योग्य बन जाएं। और बाइबल कहती है, कि वह अपनी मृत्यु के कारण हमारे पापों का छुटकारा है। उसने अपनी जान हमारे लिये दी थी। हम सब के पापों के बदले में वह मारा गया था। बाइबल में लिखा है, कि वह, जिसमें कोई पाप नहीं था, उसी को परमेश्वर ने हम सब के कारण पाप बना दिया था, ताकि उसमें होकर हम सब

परमेश्वर के निकट धर्मी अर्थात पाप के बिना जाएं। (2 कुरिन्थियों 5:21)।

और हम यीशु में प्रवेश तब करते हैं, अर्थात उसके साथ एक हम तब होते हैं, जब हम उसकी मृत्यु और उसके गाड़े जाने और उसके जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाते हैं। और यह तब होता है, बाइबल कहती है जब हम यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र और अपने पापों का प्रायश्चित मानकर, अपनी बुराईयों से अपना मन फिराते हैं, और प्रभु की आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये जल में पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा लेते है। (मत्ती 28:19; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:3-6; गलतियों 3:26, 27)।

आज सारी मानवता के लिये परमेश्वर का सुसमाचार यही है कि उसका पुत्र मसीह यीशु हमारे पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था, और गाड़ा था और तीन दिन के बाद वह फिर से जी उठा था। और जब हम उसके इस सुसमाचार पर विश्वास करके उसे मानते हैं तो हमें परमेश्वर की ओर से यह आश्वासन मिलता है, कि वह हमारे बदले में यीशु मसीह की मृत्यु के कारण, हमारे सब पापों को क्षमा करेगा, और पृवि पर के इस जीवन के बाद हमें स्वर्ग में हमेशा का जीवन देगा। पर यदि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर न मरता, तो आज हमारे पास क्या आशा होती?

यीशु मसीह के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

जे. सी. चोट

बाइबल शिक्षा देती है कि आदि में यीशु मसीह परमेश्वर के साथ था। "आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था" (यूहन्ना 1:2)।

बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की गई थी कि वह मनुष्य का उद्धारकर्ता होकर आएगा। "और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा" (उत्पत्ति 3:15)।

बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह के आने के विषय में भविष्यद्वाणी में कहा गया था, "वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ बध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शांत रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला" (यशायाह 53:7)।

बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह का जन्म कुंवारी मरियम से हुआ था। प्रभु के जनम के विषय में बाइबल कहती है, "यह सब इसलिये हुआ कि जो वचन ने

भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो, 'देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा,' जिसका अर्थ है- परमेश्वर हमारे साथ" (मत्ती 1:22, 23)।

बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह ने अनेक आश्चर्यकर्म किए। पतरस ने कहा था, "हे इस्राएलियों ये बातें सुनो: यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो" (प्रेरितों 2:22)।

बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। "वह बोल ही रहा था कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शबद निकाला: 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं: इस की सुनो" (मत्ती 17:5)। पतरस ने कहा, "...कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती 16:16)।

बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह निष्पाप था। "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं" (2 कुरिन्थियों 5:21)।

बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह उद्धार करने के लिए आया। "क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है" (लूका 19:10)।

बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह हमारे लिए मरा। "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा" (रोमियों 5:8)।

बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह मृतकों में से जी उठा। "और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था" (प्रेरित 4:33)।

बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु अपने पिता के पास स्वर्ग में चला गया। प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण के विषय में, "और उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहने हुए उनके पास आ खड़े हुए" (प्रेरितों 1:10)।

बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह फिर आएगा। "तुम्हारा मन व्याकुल न हो; तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगत तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊंगा कि जहाँ मैं रहूं वहाँ तुम भी रहो" (यूहन्ना 14:1-3)।

शमौन कहता है

रॉयस फ्रैड्रिक

प्रेरितों 2 से आरंभ करके शमौन पतरस को हम बड़ी निडरता से सुसमाचार सुनाते हुए देखते हैं। इससे पहले मत्ती 16:16 में उसने यीशु का अंगीकार किया था कि ''तू जीवते परमश्वर का पुत्र मसीह है।'' परन्तु उसका प्रेरितों 2 तक का मार्ग इतना आसान नहीं था।

''हे प्रभु, परमेश्वर न करे।
तेरे साथ ऐसा कभी न होगा।''

पतरस के अंगीकार के बाद यीशु ने अपने चेलों को चेताया था कि वह दुख उठाएगा, मार डाला जाएगा और फिर जी उठेगा (मत्ती 16:21)। यीशु कमजोर को दलेर करता है और बलवान को सावधान करता है (मत्ती 14:27; यूहन्ना 16:22; 1 कुरिन्थियों 10:12; इब्रानियों 3:12-14)।

पतरस यह विश्वास नहीं कर पाया कि यीशु मरेगा, ''इस पर पतरस उसे अलग से जाकर झिड़कने लगा, 'हे प्रभु, परमेश्वर न करे। तेरे साथ ऐसा कभी न होगा'' (मत्ती 16:22)। जो यीशु है, उसका तो पतरस ने अंगीकार किया था परन्तु जो यीशु ने कहा उस का उसने इनकार किया। पतरस अकेला नहीं है। बहुत से लोग यीशु को प्रभु मानते है। परन्तु उसकी बातों से इंकार करते है। यीशु ने कहा, ''जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो मुझे क्यों 'हे प्रभु, हे प्रभु', कहते हो?'' (लूका 6:46; देखें मत्ती 7:21:22)।

उत्पत्ति 3:4 में शैतान ने हव्वा से कहा था, ''तुम निश्चय न मरोगे।'' शैतान आमतौर पर हमें परमेश्वर की इच्छा को नजर अंदाज करने के प्रलोभन में डालता है जिसमें हमारे और उन लाभों के बीच आने वाले बलिदानों को छोड़ना हो सकता है जिनकी हम इच्छा करते हैं (मत्ती 4:8-11)। यीशु ने पतरस से कहा, ''हे शैतान मेरे सामने से दूर हो। तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है। तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इंकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा'' (मत्ती 16:23:25)।

यीशु हमारे पापों के बलिदान के रूप में अपना प्राण देने के लिए आया (मत्ती 20:28; यूहन्ना 1:2)। यीशु के जी उठने के बाद पतरस को इस बात की समझ आई और उसने लिखा, ''क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादों से चला आता है उससे छुटकारा चांदी सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष ओर निष्कलंक मेमने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ'' (1 पतरस 1:18, 19)।

''हे प्रभु यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहां तीन मण्डप बनाऊं।''

यीशु प्रार्थना करने के लिए पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ एक ऊंचे पहाड़ पर ले गया। चेले सो गए, परन्तु बाद में यीशु को महिमा पाए हुए देखने के लिए जाग उठे। दो बड़े लोग मूसा और एलिय्याह उसके साथ उसकी आने वाली मृत्यु की चर्चा कर रहे थे (मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8; लूका 9:28-36)। पतरस ''....न जानता था कि क्या उत्तर दे, इसलिए कि वे बहुत डर गए थे'' (मरकुस 9:6)। परन्तु फिर भी उसने बोल दिया चाहे ''जानता न था कि क्या कर रहा है'' (लूका 9:33)। कितनी बार हम ऐसे गलत शब्द बोल देते हैं, जब उनके बोलने की आवश्यकता नहीं होती।

पतरस ने सुझाव दिया कि वे तीनों जनों का सम्मान करें: ''हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है। यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहां तीन मण्डप बनाऊं, एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये'' (मत्ती 17:4)। परन्तु परमेश्वर ने इस विचार को ठुकरा दिया। ''वह बोल ही रहा था कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं, इस की सुनो। चेले यह सुनकर मुंह के बल गिर गए और अत्यंत डर गए। यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ, और कहा, उठो डारो मत। तब उन्होंने अपनी आंखे उठाई और यीशु को छोड़ और किसी को न देखा'' (मत्ती 17:5-8)। बाद में पतरस ने 2 पतरस 1:16-18 में इसका ब्यौरा लिखा।

पतरस की नीयत बेशक ठीक थी। परन्तु मनुष्य के धार्मिक विचार परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं है (मत्ती 15:9, 13)। हमें बिना कोई बदलाव किए उसकी आराधना और सेवा वैसे ही करनी आवश्यक है जैसा वह बाइबल में बताता है (यहूदा 3:1 यूहन्ना 9)।

मूसा और एलिय्याह पुराने नियम के समय के दौरान परमेश्वर के नबी थे। परन्तु क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था को हटा दिया (कुलुस्सियों 2:14; गलातियों 3:24-25)। अब अपने लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा मसीह की नई वाचा है (इब्रानियों 8:6-9; 9:15-17; यूहन्ना 12:48)।

केवल यीशु ही हमारा प्रभु है (इफिसियों 4:5) हमारा मध्यस्थ केवल वही है, न कि मरियम या मर चुके अन्य चेले (1 तीमुथियुस 2:5)। परमेश्वर तक जाने का हमारा मार्ग केवल वही है (यूहन्ना 14:6)। पिता परमेश्वर का आदर हम पुत्र मसीह के द्वारा करते हैं (यूहन्ना 5:22-23; 16:23-24)।

''तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा।''

अंतिम भोज के बाद यीशु अपने चेलों के पांव धोये (यूहन्ना 13:1-17)। परन्तु पतरस ने उससे कहा, तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा।'' (यूहन्ना 13:8)। यीशु ने उसके साथ बहस की और अन्त में उसने उसे अपने पांव धोने दिए।

आमतौर पर घमण्ड हमें दूसरों की सेवा करने और उन्हें हमारी सहायता करने में

रूकावट बनता है। यीशु ने दूसरों की सेवा करके अपने बड़े होने को खोया नहीं। वास्तव में उसकी सेवा के द्वारा हम उसकी महानता को देखते हैं। वह सेवा करवाने नहीं बल्कि सेवा करने आया था (मत्ती 20:28; फिलिप्पियों 2:5-11)। बाद में पतरस ने लिखा, ''हे नवयुवकों, तुम भी प्राचीनों के अधीन रहो, वरन तुम सबके सब एक-दूसरे की सेवा के लिए दीनता से कमर बांधे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।'' (1 पतरस 5:5)।

''मैं तेरा इनकार नहीं करूंगा''

यीशु ने चेतावनी दी थी कि उसके चेले उसे छोड़ जाएंगे। पतरस ने दलीज दी, ''.... मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा'' (मत्ती 26:33)। फिर यीशु ने पतरस को चेतावनी दी कि वह उसी रात तीन बार उसका इंकार करेगा। पतरस ने उत्तर दिया, ''यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, तौभी मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा।'' (मत्ती 26:35)। परन्तु उसने इंकार किया। उसने वैसे ही इंकार किया जैसे यीशु ने बताया था कि वह उसका इंकार करेगा (मत्ती 27:57-75)।

यीशु ने पतरस को छोड़ा नहीं परन्तु उसे पाप पर जय पाने में सहायता की (लूका 22:31-32; यूहन्ना 21:15-19)। यीशु के जी उठने के बाद पतरस ने उन लोगों के बीच जिन्होंने उसकी हत्या की थी, मसीह का प्रचार दृढ़ता के साथ किया, जेल गया और प्रभु से एक भी बार मुंह मोड़े मृत्यु सह ली (प्रेरितों 2-4; पतरस 1:12-15)।

पतरस की गलतियों से हमारे मन में उसके लिए आदर कम नहीं होता। इसके बजाय वह उसे हमारा और प्रिय बना देती है। वह हमारा प्रिय बनता जाता है क्योंकि पतरस की तरह ही हम भी गलतियां करते हैं और जिस प्रकार प्रभु की सहायता से पतरस ने अपनी गलतियों पर जय पाई, आप और मैं भी पा सकते हैं।

हर बात में परमेश्वर को महिमा दो

(1 पतरस 4:1-11)

डुएन वार्डन

एक जवान पिता ने एक बार मुझ से कहा, "मुझे यदि केवल जीवन पर चित्र मिल जाए।" यह आदमी चिंतित था। ऐसा लगा जैसे कि उसे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सुस्ताने का समय कभी नहीं मिला। जब उसका कारोबार इतना बड़ा नहीं था तब भी उसे लगता था कि उसे बहुत व्यस्त रहना चाहिए। उसका जीवन दिन-ब-दिन उसके काम पर केन्द्रित और उसके परिवार से दूर होता चला गया। उसके मन में था कि वह कम महत्वपूर्ण बातों के लिए जीवन की अधिक महत्वपूर्ण बातों को त्याग रहा है। समस्या यह थी कि उसे पता नहीं था कि इसे बदले कैसे। लगा कि वह योजना के बजाय मजबूरी से अधिक काम करता था। उसे श्रेय दिया जाना चाहिए कि उसने अपने बारे में सही अनुमान लगाया था। उसे जीवन पर एक बेहतर चित्र की आवश्यकता थी।

कोई भी अपने जीवन को बदलने के लिये तैयार नहीं होता, जब तक उसे समझ न आए कि कुछ गलत हुआ है। चाहे हम पाप में पकड़े जाए या केवल जीवन की अधिक महत्वपूर्ण बातों से पीछे हट जाएं, हमें बुरी आदतों को छोड़ने के लिए संसाधनों की आवश्यकता होती है। पतरस ने अपने पाठकों को पाप की पकड़ और छितराव को जो कभी उनके जीवनों पर था, उतारने में इस प्रकार से सहायता की। उसने उन्हें याद दिलाया, "सब बातों का अंत तुरंत होने वाला है" (4:7)। यह जीवन को एक नया रूप दे देता है। नये नियम की कलीसिया यह विश्वास करते हुए कि वह शीघ्र आ रहा है, अपने प्रभु के वापस आने की राह सरगर्मी से देख रही थी।

अपने आप को मसीह के उद्देश्य के साथ लैस कर लो (4:1-3)

कोई भी जिसने सशस्त्र संघर्श में होने वाली मृत्यु और कष्ट को देखा हो, उस अनुभव से प्रकाश नहीं करता। पतरस ने मसीही संघर्ष की गंभीरता को कम आंका जब उसने नैतिक भलाई और व्यक्तिगत निष्ठा के नमूना बनने के लिए अपने पाठकों से आग्रह करने के लिए युद्ध के मैदान के शब्द को चुना। उन्हें मसीह के उद्देश्य या मंशा के साथ अपने आपको लैस करना था (4:1)। यह विचार फिलिप्पियों 2:5 वाला ही है कि "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था, वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।"

4:1 में पतरस का विचार (1) मसीह के कष्ट से (2) मसीही लोगों के उसकी मंशा के साथ लैस होने से (3) पाप के कष्ट और त्यागने तक आगे जाता है। इन विचारों के संबंध को पहचानने का अर्थ आयत 1 को समझ लेना है, परन्तु यह कोई छोटी बात नहीं है। पहले दो विचार इस प्रकार जुड़ सकते हैं, जैसे मसीह ने कष्ट का सामना किया, उसने अपने लोगों के लिए एक नमूना ठहरा दिया कि कष्ट आने पर उन्हें क्या करना है। कष्ट उठाने के समय मसीही लोगों को न केवल सहने के लिए, बल्कि कष्ट पर अपने दृष्टिकोण को रखने के लिए भी उसकी मंशा के साथ लैस होना आवश्यक है। पत्रों में कहीं और कहने की तरह, पतरस ने मानने के लिए अपने लोगों के उदाहरण के रूप में मसीह की ओर ध्यान दिलाया।

आयत 1 का अंतिम भाग और कठिन है, "...जिसने शरीर में दुख उठाया वह पाप से छूट गया।" आयत के इस भाग की कम से कम दो व्याख्याएं होती हैं। (1) शायद इसका अर्थ यह है कि कष्ट का मसीही व्यक्ति पर सरकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जिसने मसीह के लिए दुख उठाया है उसमें पाप का सामना करने की सामर्थ और समाधान है जो उसे मसीह के बाहर नहीं मिलता। वह पाप से इस अर्थ में छूट गया है कि अब संसार और शरीर का उस पर वह नियंत्रण नहीं है, जो पहले कभी था।

(2) एक और संभावना है कि "शरीर में, दुख उठाया" वाक्यांश मृत्यु यानी पाप के पुराने मनुष्य की आत्मिक मृत्यु के लिए रूपक है। यदि ऐसा है तो पौलुस मसीही व्यक्ति की पाप से मृत्यु को उस जीवन से अलग कर रहा था जो उसे प्रभु में मिलता है। अगली आयत में (4:2) उसने मसीही व्यक्ति के जीवन का विवरण दिया है। इसके अलावा अगले संदर्भ (3:21) में पतरस ने बपतिस्से का उल्लेख किया। रोमियों 6 में पौलुस ने बपतिस्में को पाप के पुराने मनुष्य की मृत्यु तथा नये जीवन को पुनरुत्थान के रूप में दिखाया। रोमियों 6:7 में ऐसी ही आवाज सुनाई देती है,

"क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूट कर धर्मी ठहरा।" इस आयत की और 1 पतरस 4:1 के शब्दों में कई बातों पर समानता है। पौलुस ने कई साल पहले रोम के मसीही लोगों के नाम अपना पत्र लिखा था। हर संभावना है कि पतरस ने इसे पढ़ा होगा। इन कारणों से दूसरी व्याख्या अधिक सही लगती है।

कोई संदेह नहीं कि पाप का पुराना जीवन मसीही व्यक्ति को मसीह में मिले जीवन के लिए धन्यवाद दे सकता है, परन्तु पुरानी आदतों को छोड़ना कठिन है। पतरस ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि उन्होंने अपने जीवन का काफी भाग लुचपन मतवालापन और लीलाक्रीड़ा की अभिलाषाओं में बिताया था (4:3)। पुराने जीवन की यह अभिलाषा आज भी उन्हें तंग करती और उनके लिए बोझ थी। मसीह में जीवन पुराने जीवन से मृत्यु की मांग करता था। उन्हें उसकी ओर आने के लिए या तो परीक्षा का सामना करना या उसके साथ अर्थात जीवन के उस ढंग से समझौता करना था।

छितराव के जीवन से इंकार करना (4:4-6)

एशिया माइनर के यूनानी नगरों में सामाजिक और समुदायिक जीवन का सीधा संबंध मूर्तियों की पूजा और मतवालेपन तथा कामुकता से था जिसके साथ कई बार पूजा भी जुड़ी होती थी। मूर्तिपूजक लोग सार्वजनिक समारोहों तथा खेलों में भाग लेने से मसीही व्यक्ति के इंकार को अपने आपको बड़ा और समुदायिक सोच की कमी के अर्थ में देखते थे।

दूसरी शताब्दी के मध्य में साहित्य शास्त्री एलियस अरिस्टाइड्स ने अपने संसार के दोषदर्शी दार्शनिकों के साथ-साथ नये मसीही लोगों की भी आलोचना की। उसने कहा:

उनका व्यवहार पलस्तीन में परमेश्वर की निंदा करने वाले लोगों से बहुत मिलता है। वे (अर्थात् मसीही लोग) भी बाहरी चिन्हों के द्वारा अपनी नास्तिकता को दिखाते हैं कि वे उन्हें जो उन से ऊपर हैं, पहचानते हैं और वे अपने आपको यूनानियों तथा हर अच्छी बात से अलग करते हैं।

इन शब्दों के साथ पतरस के एक निकट समकालीन अरिस्टाइड्स ने प्रेरित द्वारा सुझाए गए हर कारण के लिए मसीही लोगों पर आरोप का ढेर लगा दिया कि "वे अचंभा करते हैं, कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उनका साथ नहीं देते" (4:4)।

मुंह से भला-बुरा कहना, जैसे अरिस्टाइड्स ने कहा, एक बात थी, परन्तु बुरा-भला कहने के अलावा कई बार शारीरिक ताड़ना भी दी जाती थी। मसीही लोग अधिकतर अपनी संख्या यूनानी नगरों के निर्धन और दलितों के साथ बढ़ाते थे। उच्च वर्ग के लोग निर्धन और कमजोर लोगों को तुच्छ मानते थे। पतरस के अपना पत्र लिखने के बाद पन्द्रह सालों से भी पहले वेसुवियुस पर्वत के पास गाड़े गए एक व्यक्ति ने पौम्पयी की एक दीवार पर लिखा था, "मुझे निर्धन लोगों से घृणा है। यदि कोई कुछ दिए बिना कुछ चाहता है, तो वह मूर्ख है। वह कीमत चुकाए और उसे मिल जाएगी।" मसीही लोगों के पास निर्धन होने का अतिरिक्त चिन्ह था। पतरस ने यह कहते हुए इन लोगों को तसल्ली देने की पेशकश की कि जो लोग मसीही लोगों

को सताने वाले है "वे उसको जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करने को तैयार है, लेखा देंगे" (4:5)।

मसीही लोगों के लिए जो इक्कीसवीं शताब्दी में रहते हैं, इस सबका क्या अर्थ है? मुझे नहीं लगता कि इक्कीसवीं सदी के मसीही लोगों पर पहली सदी के मसीही लोगों से संसार के लुचपन और लीलाक्रीड़ा में भाग लेने से कम दबाव है। शराब से इंकार करने वाले, मनोरंजन चुनने में सावधान, हिंसा और शाम को अपने घरों में टेलीविजन के कामुक कार्यक्रमों को अनुमति देने से इंकार करने वाले, लॉटरी यामांग करने पर गर्भपात के विरूद्ध सरकार के समर्थन का विरोध करने के लिए आवाज उठाने वाले, उन नियमों का समर्थन करने वाले या विरोध करने वाले लोगों को अजीब माना जाएगा। उन पर लोगों से सहमत होने का दबाव पड़ेगा। किसी भी युग की तरह इक्कीसवीं शताब्दी के लोगों को 4:1-6 में पतरस की ताड़नाओं की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

4:6 में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसीलिए सुनाया गया कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हो, पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें।" इस आयत को समझने का हमारा ढंग 3:19, 20 की हमारी व्याख्या से प्रभावित होना आवश्यक है। यदि उन आयतों का अर्थ है कि मसीह अपनी विजय की घोषणा करने के लिए निचले संसार में नीच उतरा, तो 4:6 कहता है कि उसका वहाँ जाना मरे हुओं के "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आत्मा में जीने" के योग्य होने का कारण बना। क्या हम यह निष्कर्ष निकालें कि हम मसीह के बाहर मर सकते हैं, पाप में खो सकते हैं और मरने के बाद मन फिराने और उद्धार पाने का हमें एक और अवसर दिया जाएगा? लगता नहीं है। इस आयत को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि वाक्य बदल जाते है। सुसमाचार उनमें "प्रचार किया" गया था, जो "मरे हुए हैं।" पतरस के अपना पत्र लिखने के समय वे मरे हुए थे। आयत में ऐसा कोई सुझाव नहीं है कि वे सुसमाचार सुनाए जाने पर मर गए थे।

यदि 4:6 यह सिखाता है कि लोग मरने के बाद मन फिरा सकते है और उद्धार पा सकते हैं, तो यह नये नियम में और कहीं अपनी ही शिक्षा का विरोध करता है। इब्रानियों 9:27, 28 कहता है, "जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उस की बाट जोहते हैं, उनके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा।" यूहन्ना 5:28, 29 में यीशु ने उनकी बात की जो कब्र में उसकी आवाज को सुनेंगे, जिनमें से कुछ जीवन के पुनरुत्थान के लिए बाहर आएंगे और अन्य दण्ड के पुनरुत्थान के लिए। उसके शब्दों में मृत्यु के पश्चात किसी के मन परिवर्तन की अनुमति नहीं है। अन्य आयतें (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18; रोमियों 2:3; 14:10; 1 कुरिन्थियों 4:5; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 पतरस 3:7) यही बात सिखाती है। हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि पतरस कह रहा था कि सुसमाचार उन लोगों में सुनाया गया था जो तब से मरे हुए थे। यदि उन्हें उनके शरीर में किए गए कामों के अनुसार न्याय देना था तो वह खोए हुए थे, परन्तु क्योंकि

उन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया और इसे माना था, इसलिए उनका उद्धार होना था। पतरस ने कहा कि उन्होंने "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार" जीवन बिताना था।

"मुझ में बने रहो" (यूहन्ना 15)

ऍंडी क्लोर

"यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। जैसे पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैंने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे, जैसे कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं। मैंने ये बातें तुम से इसलिए कही है, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए" (आयतें 7-11)।

यीशु में बने रहने पर नये नियमों में मुख्य वचनों में से एक यूहन्ना 15:7-11 है। यह हवाला क्रूस पर अपने चढ़ाए जाने से पहले गुरूवार की शाम अपने प्रेरितों के साथ हमारे प्रभु की बातचीत से संबंधित है। आने वाले अंधकारमय भविष्य के संबंध में उन्हें तसल्ली देते हुए उसने उन्हें उसमें बने रहने का आदेश दिया। "उसमें" वाक्यांश का संकेत उन शिक्षाओं के लिए था जो उसने उन्हें दी थी, अर्थात जीवन का वह दायरा जो उसने हमें दिया था, प्रेम का वह माहौल जो उन्हें उससे मिला था वह सामर्थ जो उन्हें केवल वही दे सकता था।

यह प्रोत्साहन दाखलता और टहनियों के रूपक के बाद जिसका इस्तेमाल यीशु ने अभी भी किया था (15:1-5)। उसने अपने प्रेरितों से कहा था, "तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में, जैसे डाली यदि दाखलता में बने न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहे तो नहीं फल सकते" (15:4)। कोई टहनी दाखलता से अलग होकर फल नहीं सकती ओर न ही प्रेरितों को यीशु से अलग होकर आत्मिक जीवन मिलता है। उसका पिता किसान अर्थात दाखलता का मालिक है। यीशु स्वयं दाखलता है और उसके प्रेरित और चेले टहनियां है। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पवित्र आत्मा हमारी अगुआई करता है कि हम टहनियां बन सकें।

यह हवाला इस प्रकार से आगे बढ़ता है, जिसमें यीशु प्रेरितों के लिए उसके वफादार रहने के कारण गिना रहा था। एक अर्थ में उसने उन से कहा, "तुम्हें किसी को, किसी परिस्थिति को, किसी त्रासदी को तुम्हें मुझ में बने रहने से रोकने न देने का कारण यह है कि। विरोध की लहरें चाहे कितनी भी खतरनाक क्यों न हो, मुझे थामे रखो और मुझ में बने रहो।" उसमें बने रहने के लिए उन्हें दी गई उसकी प्रेरणाएं आज हमारे लिए भी हैं।

यीशु ने उन्हें क्या बताया था?

"प्रार्थना की आशीष का आनन्द लो"

"यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा" (15:7)।

"मुझ में बने रहने वालों को प्रार्थना की आशीष मिलेगी।" जो सचमुच में प्रार्थना करने वाला है वही यीशु में बना रहता है, क्योंकि असली प्रार्थना यीशु के नाम और अधिकार में और यीशु की सोच के अनुसार ही होती है।

प्रार्थना उन लोगों का विशेषाधिकार है, जो यीशु के साथ वाचा के संबंध में बने रहते हैं। मसीही लोगों के रूप में हम उसके वचनों में "बने रहते" या "जीवित रहते" है। उसके वचनों के लिए यह हमारा आज्ञापालन उस स्तर तक पहुंच जाता है जिसे हमारे अन्दर उसके वचनों में अनुमति देना कहा सकता है। जब हम सचमुच में आज्ञा मानते हैं, तो हम यीशु की शिक्षाओं के साथ एक हो जाते हैं। उसके वचन हमारे मनों को भर देते हैं ताकि हमारे विचार उसी की सोच से चलें।

यीशु ने अपनी सामर्थ, अधिकार और नाम उनको दिया, जो उसमें बने रहते हैं। उसने कहा, "तुम जो चाहो, इच्छा करो या उसकी तुम्हें आवश्यकता हो, मैं तुम्हारे लिए पिता से ले लूंगा।" उसमें बने रहने वालों को यीशु द्वारा इस प्रकार से सम्मान दिया जाता है क्योंकि वह उनके लिए जो उसकी इच्छा को लगातार पूरी करने की चाह करते हैं बेहतर करने की तलाश में रहता है। पिता के पास प्रार्थना इसी पृष्ठभूमि में फलती है।

"बहुत सा फल लाओ"

"मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे" (15:8)।

"जो मुझ में बने रहते हैं वे बहुत सा फल ला सकते है।" केवल यीशु के द्वारा ही हमें आत्मिक जीवन, ईश्वरीय बुद्धि और वह सच्ची समझ मिल सकती है जो एक सच्चे चेले के लिए फल लाने के लिए आवश्यक है।

"फल" शब्द परमेश्वर और मसीह की इच्छा को पूरी करते हुए एक चेले के पूर्ण और विजय जीवन को कहने का एक सामान्य शब्द है। वह वचन जो उसमें बना रहता है उसके जीवन और कार्यों और बातों में दिखाई देता है। जब लकड़ी को आग में डाला जाता है, तो आग जल्द ही लकड़ी में चली जाती है। लकड़ी जलती है और आग की ऊर्जा के साथ चमक पड़ती है। मसीह के चेले के साथ भी ऐसा ही होता है। क्योंकि वह यीशु में जीवित है और यीशु उसमें जीवित है। चेले में आने वाले मसीही जीवन और हृदय के सभी अद्‌भुत पहलू संसार में उसके मसीह के कार्य को ले जाने के द्वारा बहते हैं।

"पिता की महिमा करो"

"मेरे पिता की महिमा इसी से होगी कि तुम बहुत सा फल लाओ" (15:8)।

"मुझमें बने रहने वाले लोग फल देकर पिता की महिमा करेंगे।" अपने पुत्र को भेजने के परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने पर परमेश्वर को महिमा मिलती है। परन्तु

यह उद्देश्य केवल तभी क्रियान्वित होता है और पूरा हो सकता है जब अपने मन से और अपने जीवन में यह सोचते हुए कोई चेला यीशु में आता और उसके पीछे चलता है।

परमेश्वर की सनातन मंशा पृथ्वी के प्रत्येक जीवन में पिता की उस महान योजना, शुद्ध प्रेम और बहुतायत के जीवन को आगे चमकाता है। चेलो के काम यीशु के हस्ताक्षर और परमेश्वर की अद्भुत महिमा की सुन्दर रोशनी चमकाते हुए चमकते हैं।

"मेरे सच्चे चेले बनो"

"मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।"

"जो मुझमें बने रहते हैं केवल वही मेरे सच्चे चेले हैं।" शिष्य होना सदस्यता का कार्ड या "मैम्बरशिप" का बिल्ला लगाने से कहीं बढ़कर है। यानी यह केवल पुष्टि करने से अधिक है। शिष्य होना एक मूल सच्चाई तक आता है। चेला होने के नाते हमें अपने आप से पूछना आवश्यक है, "क्या मैं यीशु में बना हुआ हूं या नहीं।" हम इस मूल्यांकन का इस्तेमाल कर सकते हैं, "मैं उसमें, उसके द्वारा और उसके लिए जीवित हूं, यदि मैं वह फल ला रहा हूं जो केवल उसी में मिल सकता है, तभी और केवल तभी मैं यीशु का असली चेला हूं।"

"मेरे प्रेम में बने रहो"

"जैसे पिता ने मुझसे प्रेम रखा, वैसा ही मैंने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे, जैसे कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं" (15:9, 10)।

"जो मुझ में स्थिर रहते हैं वे मेरे प्रेम में बने रहते हैं।" यीशु का प्रेम हमें हमारे लिए उसके जीवन का उच्चतम स्तर और सबसे बड़ी आशिषें देने से मेल खाता है।

एक सांसारिक पिता अपने बच्चों से गहारा प्रेम करता है और हर बच्चे को बेहतर जीवन और सार्थक भविष्य देने का अवसर देने के लिए हर प्रयास करता है। जब उसके बच्चे धन्यवाद के साथ इन अवसरों से लाभ उठाते हैं और आशा के साथ उन्हें पाते हैं तो वे आत्मिकता के प्रेम में चल रहे होते हैं। यीशु में बने रहने का अर्थ उस मार्ग पर चलना है जो हमारे लिए उसके प्रेम ने बनाया है। उसमें जो उसने सिखाया है बने रहकर, उस बेहतर जीवन को पकड़े रखकर और उसकी तलाश करके जो उसने उन्हें दिया है, उसके चेले बदले में उससे प्रेम करते हैं। यीशु की आज्ञाओं को मानकर, हम उससे प्रेम में बने रहते हैं, ठीक वैसे ही जैसे अपने पिता की आज्ञाओं को मानकर वह उसके प्रेम में बना रहा।

"आनन्द की भरपूरी को जान लो"

"मैं ने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए" (15:11)।

"जो मुझ में बने रहते हैं वे आनन्द की भरपूरी को जान लेंगे।" उस आनन्द को जो यीशु ने प्रेरितों को दिया और हमें भी देता है उसमें बने रहकर ही भरपूरी से पाया जा सकता है। यीशु न केवल इस आनन्द को देता है बल्कि वह इसके बनने के लिए

आवश्यक पृष्ठभूमि भी तैयार करता है। उसकी ईश्वरीय आशिषों से घिरे होने पर उसमें चलते हुए वह हमें शांति देता है जो उसकी सनातन प्रतिज्ञाओं से मिलती है और वह आश्वासन जो उसकी असीमित शक्ति से मिलता है। यह जानते हुए उसकी प्रतिज्ञाएं हमारे लिए वास्तविकताएं हैं, और इस बात से सचेत कि उसकी सामर्थ हम में काम करती रहती है, हमें आनन्द के साथ आशीष मिलती है जो उसके साथ चलते हुए हमारे मार्ग को रोशन करती है।

हे हमारे पिता

ह्यूगो मेकोर्ड

बाइबल में हमारे परमेश्वर के कितने सजीव, विशाल, यशस्वी और भयभीत करने वाले चित्रण है। परमेश्वर के बारे में मुझे अपनी मां की गोद में भी ऐसा प्रभाव मिला था कि वह महान सृष्टिकर्ता और सब वस्तुओं का बनाने वाला है, शायद आपको भी ऐसा ही प्रभाव मिला हो होगा। बाद में मैंने पढ़ा:

देख, पहाड़ों का बनाने वाला और पवन का सिरजने वाला, और मनुष्य को उसके मन का विचार बताने वाला और भोर को अंधकार करने वाला, और जो पृथ्वी के ऊंचे स्थानों पर चलने वाला है, उसी का नाम सेनाओं का परमेश्वर यहोवा है (आमोस 4:13)।

उसके यही विशेष गुण हमें आकर्षित करते हैं, "क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वर जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुतर हैं" (रोमियों 1:20)। ऐसे परमेश्वर के सामने हम भौंचक्के रह जाते हैं।

एक और आरंभिक प्रभाव जो मुझे मेरी मां और बाइबल से मिला था वह यह कि परमेश्वर केवल हमारा सृष्टिकर्ता ही नहीं, बल्कि "न्यायी परमेश्वर" (इब्रानियों 12:23) भी है। वह हर एक कार्य का, चाहे वह दृश्य हो या गुप्त, अच्छा हो या बुरा सबका न्याय करेगा (सभोपदेशक 12:14)। इसलिए परमेश्वर के भय (2 कुरिन्थियों 5:11) और न्याय की निश्चितता के बारे में सुनकर हम उसके सामने भयभीत खड़े हैं।

हमारा उसके साथ एक रिश्ता है

परन्तु, परमेश्वर का सबसे प्रिय बनने वाला और बहुमूल्य प्रभाव यह नहीं है कि उसके पास असीमित शक्ति है, और न ही यह कि वह सबका न्याय करने वाला है, बल्कि यह है कि वह हमारा पिता है। यदि वह हमारा पिता है, तो हम उसकी संतान भी हैं और वह हमारी संभाल करता है। पशुओं को नहीं बल्कि मनुष्यों को परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है (याकूब 3:9)। हमारे लिए अपनी दिलचस्पी के कारण ही, परमेश्वर ने मसीह से कहा था, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं" (उत्पत्ति 1:26क)। मनुष्य के जानवर के किसी निम्न रूप से बनने में विश्वास रखने वाले विकासवादी, इस विचार का आनन्द नहीं ले सकते।

बाइबल में विश्वास करने वाले लोग इस बात से फूले नहीं समाते कि मनुष्य को "परमेश्वर से थोड़ा ही कम" (भजन 8:5) बनाया गया है और वह "आत्माओं के पिता" (इब्रानियों 12:9) का एक पुत्र है। सृष्टि के द्वारा सब लोग परमेश्वर के पुत्र है, और सम्पूर्ण मनुष्य जाति का एक ही पिता है (उत्पत्ति 6:2; लूका 3:38; प्रेरितों 17:26)।

फिर तो यह विचार आनन्दित करने वाला है कि हमारा पूर्वज नीचे से नहीं बल्कि ऊपर से अर्थात स्वर्ग से है। फिर भी, केवल सृष्टि के द्वारा परमेश्वर का पुत्र होने में फूलने वाले, सुसमाचार के द्वारा कभी परमेश्वर का पुत्र नहीं बनने वाले, का अंत जानवरों से भी बुरा है। जानवर मर जाते हैं और उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है; परन्तु मनुष्य में कुछ ऐसा है जो कभी नहीं मरता, और उसी का अनन्त आग में जाने का खतरा है। क्योंकि जिसे परमेश्वर के स्वरूप में होने का सौभाग्य प्राप्त है, यदि वह अपने पिता की आज्ञा मानने से इंकार कर देता है, तो उसके लिए अच्छा होता है कि वह पैदा नहीं होता। सही होने के लिए, मनुष्य को दो अर्थों में परमेश्वर का पुत्र बनना आवश्यक है, सृष्टि और एक नई सृष्टि। वह सांसारिक माता-पिता के घर एक बालक के रूप में जन्म लेता है, परन्तु उसके लिए नए सिरे से जन्म लेना भी आवश्यक है (यूहन्ना 3:3)। उसके लिए प्रभु मसीह में "नई सृष्टि" बनना आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 5:17)। हमारे प्रभु ने कहा है, "मैं मुझ से सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" (यहून्ना 3:5)।

उसकी नजर में हमारा बहुत महत्व है

अपने पिता के बारे में विचार करते समय आपके मन में उमड़ती भावनाओं को यीशु जानता है, और वह चाहता है कि उसके चेले परमेश्वर के बारे में ऐसा ही सोचें। जब सांसारिक पिता अपने बच्चे के मुंह में रोटी डालने के लिए इतना बलिदान कर सकता है, "...तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?" (मत्ती 7:11)। असीमित शक्ति और सर्वज्ञ होने के कारण वह मेरे बारे में मुझसे अधिक जानता है, यहाँ तक कि उसने मेरे सिर के बाल भी गिने हुए हैं (लूका 12:7)। एक चिड़िया को भी नहीं भूलने वाला अपने बच्चों को आश्वासन देता है, "डरो नहीं, तुम गौरेयों से बढ़कर हो" (लूका 12:7)।

सात बच्चों की मां का कहना था, "मुझे सब बच्चे एक जैसे प्रिय है।" सांसारिक माता-पिता अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, परन्तु वह कितना प्रेम करता होगा जो सबका पिता है। वह बड़े प्रेम से मेरी तरफ देखता है, और उसी समय उसे संसार के दूसरे किसी कोने में अपने किसी और बालक की भी उतनी ही चिंता होती है। वह छह बिलियन से अधिक लोगों को उनके नामों से जानता है, इससे भी अधिाक संख्या में आत्मिक जगत में उसके बच्चे हैं। वेदी के नीचे (सताव सहने वाले लोग) से आत्माएं जब अपने छुड़ाने वाले को पुकारती हैंतो वह उनकी सुनता है। (प्रकाशितवाक्य 6:9, 10)। परमेश्वर के छह बिलियन से अधिक स्वरूपों में से कोई भी, जो अभी शरीर में है उसे किसी भी समय पुकार सकता है; उन सब को सुनने के लिए उसे उसे कोई कर नहीं देना पड़ता है। नहीं, वह हर एक की बात उतने ही धैर्य तथा ध्यान से सुनता

है जैसे वह केवल एक व्यक्ति की ही सुन रहा हो।

उसके प्रति हमारी एक जिम्मेदारी है

निःसंदेह, पिता कपट से प्रार्थना करने वाले की नहीं सुनेगा। परमेश्वर की व्यवस्था से मुंह मोड़ने वाले की प्रार्थना भी घिनौनी होती है (नीतिवचन 28:9)। प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती है, और उसके कान उनकी बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करने वालों से विमुख रहता है (1 पतरस 3:12)। वह उससे बात करने के लिए भलाई करने की इच्छा करने वालों को रिझाता है, और उन्हें निराश नहीं करता (लूका 18:1)।

पिता सांसारिक हो या स्वर्गीय, जब कोई बच्चा "धन्यवाद" कहना छोड़ देता है तो दोनों ही प्रसन्न नहीं होते। जब मैं सुबह उससे बात किए बिना कमरे से निकल जाता हूं, तो पिता का हृदय बड़ा दुःखी होता है। जब मैं दिन के काम उसे भरोसे में लिए बिना और उसके पूर्वप्रबंध के लिए उसका धन्यवाद किए बिना रूखा होकर करने की कोशिश करता हूं तो उसका हृदय दुःखी होता है। यदि आप भी यीशु की तरह ही (मरकुस 1:35) मानते हैं कि आप पूरा दिन कोई बात या काम अपनी सहायता करने वाले पिता से अकेले में बात किए बिना नहीं कर सकते, तो उसे खुशी होती है। जब आप गुप्त में अपने पिता से बात करने के लिए निर्जन स्थान या बाग में सुबह की ओस सूखने से पहले जाते हैं, तो आपको दिनभर के लिए उससे सामर्थ मिलेगी, और आप आसानी से शैतान के चुंगल में नहीं फसेंगे। "...और जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी शक्ति हो" (व्यवस्थाविवरण 33:25)। दानिय्येल की तरह, यदि आप दिन में ईश्वरीय संगति के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठने के लिए समय निकालें, तो आप दिनभर के कामकाज में अधिक दयालु और धैर्यवान होंगे। शाम को, अपने खाने तथा सोने के लिए अपने परिवार तथा मित्रों के लिए, करुणा तथा सुरक्षा के लिए, पापों की क्षमा तथा शुद्धता के लिए पिता को धन्यवाद देना न भूलें; उद्धार का आनन्द आपको मिल जाएगा और आप चैन की गहरी नींद ले सकेंगे।

वह हमारे साथ एक श्रोता है

आपका एक पिता है। वह आपका पिता है। हम मनुष्यों को उस पिता से बात करने का सबसे बड़ा सौभाग्य मिला है, जो आकाश और पृथ्वी का स्वामी अर्थात स्वर्गीय पिता है। हम किसी और के पास प्रार्थना करने क्यों जाएं? बड़े दुःख की बात है कि लाखों/करोड़ों बच्चों को मरियम और संतों की प्रार्थना करने के लिए सिखाया जाता है। स्वर्गदूतों को भी अत्यधिक आदर नहीं दिया गया (मत्ती 4:10; कुलुस्सियों; प्रकाशितवाक्य 22:8, 9), मनुष्य तो शरीर में हो या शरीर से बाहर, उनसे बहुत कम है (प्रेरितों 10:25, 26; 14:15)। मरियम की उपासना करने वालों ने "सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है" (रोमियों 1:25)। हमें इस बात से आनन्दित होना चाहिए कि हम पिता से ऐसे बात कर सकते हैं जैसे किसी मित्र से बात कर रहे हो, और हमारे साथ हमारे लिए बिनती करने के लिए पवित्र आत्मा (रोमियों 8:26, 27) और यीशु (1 यूहन्ना 2:1) खड़े होते हैं।

किसी ने कहा है कि हम परमेश्वर को सम्बोधित करते हुए "आप" के बजाय

"तू" कहकर अधिक ही घनिष्ठ हो जाते हैं। "आप" कहने में अधिक सम्मान है, क्योंकि उम्र के साथ इसके बाल सफेद हो चुके हैं; औपचारिक भाषा में साधारण शब्दों से अधिक सम्मान नहीं दिखाई देता। नहीं, आप उस पिता से इतने घनिष्ठ नहीं हो सकते जो आपके साथ वैसे ही चलना चाहता है जैसे वह संसार में पाप के प्रवेश से पहले, दिन में ठंडे समय में अदन के पेड़ों की शाखाओं के नीचे आदम के साथ टहलता था (जैसे उत्पत्ति 3:8क में मिलता है)। कोई मनुष्य परमेश्वर के साथ इतना अधिक चंचल हो सकता है जिसके लिए उसकी निंदा की जानी चाहिए। परन्तु निकटता के अर्थ में, हमें परमेश्वर के साथ घनिष्ठ होना चाहिए, क्योंकि हमें उसी के स्वरूप में बनाया गया था। हम गहरे विचारों में उसके साथ चल सकते हैं; वह हमारे बारे में सब कुछ जानता है। हमारे जीवन से उसके अनुग्रह की स्तुति और महिमा होनी चाहिए।

क्या आपने किसी को नज़रअंदाज़ तो नहीं कर दिया?

अर्नेस्ट गिल

टैक्नोलॉजी ने जहाँ जीवन को बहुत आसान बना दिया है वहीं हमें कुछ ऐसी चीजें भी देखने को मिलती है जिन पर यकीन करना बड़ा कठिन और नामुमकिन सा लगता है। ऐसी ही एक घटना पिछले दिनों में दिल्ली की एक सड़क पर देखने को मिली। कैमरे ने दिखाया कि एक टैंपो वाला बीच सड़क पर एक पैदल यात्री को टक्कर मारता है, फोन पर बात करते हुए (बिना इस बात की चिंता किए कि जिसे उसने टक्कर मारी थी उसका क्या हुआ, यह देखने के लिए नहीं कि उस आदमी का क्या हाल है, बल्कि (यह देखने के लिए कि कहीं उसकी गाड़ी को खरोंच तो नहीं आई, नीचे उतरता है। यह तसल्ली कर लेने के बाद कि गाड़ी ठीक-ठाक है, वह गाड़ी पर बैठने लगता है।) बेशक उसकी नीयत उस अनजान व्यक्ति की हत्या करना नहीं होगा। इतने में एक साइकिल सवार पीछे से आता है और वह उस गिरे हुए व्यक्ति को एक नजर देखता है, और निकल जाता है। उसके बाद एक और व्यक्ति उधर से गुजरते हुए उसे तड़पते हुए देखता है, मगर किसी कारण वह भी नज़रअंदाज़ करके चला जाता है। और भी लोग उधर से आते-जाते दिखाई देते हैं। हर कोई जल्दी में नजर आता है। एक व्यक्ति जो जल्द में नहीं दिखा वह उसका मोबाइल उठाने वाला व्यक्ति था। उसने बड़ी सहजता से उसका मोबाइल उठाया जो मोबाइल पर किसी से बातें करते समय टक्कर लगने के कारण गिर गया था। कैमरे द्वारा दिखाई गई यह कहानी आज की है। इसमें लोगों के सड़क पर चलते समय मोबाइल का इस्तेमाल करने का खतरा तो पता चलता ही है पर ऐसी ही एक कहानी आज से दो हजार साल पहले हमारे प्रभु ने अपने पास आए एक व्यक्ति को बताई थी जिसने पूछा था कि मेरा पड़ोसी कौन है?

पवित्र बाइबल में लूका की पुस्तक के 10 अध्याय में इसका वर्णन इस प्रकार

से मिलता है। "और देखो, एक व्यवस्थापक उठा और यह कहकर उसकी परीक्षा करने लगा, ''हे गुरु, अनन्त जीवन का वारिस होने के लिये मैं क्या करूं?' उससे उसने कहा, 'व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है' उस ने उत्तर दिया, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।' उसने उस से कहा, 'तू ने ठीक उत्तर दिया है, यही कर तो तू जीवित रहेगा।" परन्तु उसने अपने आप को धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, 'तो मेरा पड़ोसी कौन है?'

यीशु ने उत्तर दिया, 'एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था कि डाकुओं ने घेर कर उसके कपड़े उतार लिए, और मार-पीटकर उसे अधमरा छोड़कर चले गए।

और ऐसा हुआ कि उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था, परन्तु उसे देख के कतराकर चला गया। इसी रीति से एक लेवी उस जगह पर आया, वह भी उसे देख के कतराकर चला गया।

परन्तु एक सामरी यात्री वहाँ आ निकला, और उसे देखकर तरस खाया। उसने उसके पास आकर उसके घावों पर तेल और दाख रस डालकर पट्टियां बांधी, और अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया, और उसकी सेवा टहल की। दूसरे दिन उसने दो दीनार निकालकर सराय के मालिक को दिए, और कहा, 'इसकी सेवा टहल करना, और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने पर तुझे भर दूंगा।'

अब तेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया था, इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन ठहरा?'

उसने कहा, 'वही जिसने उस पर दया की।'

यीशु ने उससे कहा, 'जा तू, भी ऐसा कर' "(लूका 10:25-37)।

इस कहानी को लोग धन्य सामरी या नेक सामरी के नाम से भी जानते हैं और दुनिया भर में गुड सैमेरिटन नाम से न जाने कितनी संस्थाएं और अस्पताल अनगिनत लोगों की सेवा आज भी कार्य कर रहे हैं। दुनिया भर के मिशन अस्पतालों या परोपकारी संस्थाओं के खुलने के पीछे प्रेरणा अकसर यही कहानी होती है।

उस व्यक्ति की तरह हमें भी यही लग सकता है कि शायद हमारा पड़ोसी वही होगा जिसे हम जानते हैं या जो हमारे पड़ोस में रहता हो। पर जैसा कि प्रभु ने समझाया कि यदि कोई परेशानी में है या उसे हमारी मदद की जरूरत है तो वह चाहे दुनिया के किसी भी कौने में क्यों न रहता हो, और हम उसे बिल्कुल न जानते हो, वही हमारा पड़ोसी है। इसे न मानने का परिणाम प्रभु ने बताया कि "जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे, तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियां उसके सामने इक्ट्ठा की जाएंगी; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसा ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। वह भेड़ों को अपनी दहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ा करेगा।

"तब वह बाईं और वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगों, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। क्योंकि मैं भूखा था,

और तुमने मुझे खाने को नहीं दिया, मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया; मैं परदेशी था, और तुमने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था, और तुमने कपड़े नहीं पहिनाए; मैं बीमार और बन्दीगृह में था, और तुम ने मेरी सुधि न ली।'

"तब वे उत्तर देंगे, 'हे प्रभु, हमने तुझे कब भूखा, या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की।' तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं कि तुमने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया (मत्ती 25:31-46)।

इतना ही नहीं, प्रभु ने बताया कि "ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।"

प्रभु ने बताया कि दो ही आज्ञायें हैं जिन्हें हम यदि समझ जाएं तो प्रभु की व्यवस्था को पूरा कर सकते हैं। (1) "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।" और (2) "उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख" (मत्ती 22:37-39)।

सवाल यह है कि हम किसी को यूं नजर अंदाज करके कि हम उसे जानते नहीं है, मनुष्यों से तो बच सकते हैं पर प्रभु की नजर और उसके न्याय से नहीं बच सकते। तो फिर हमें क्या करना चाहिए? वही जो प्रभु ने उस व्यवस्थापक से करने को कहा था।

क्या मृतक होश में हैं?

पैरी बी. कॉथम

अकसर लोग पूछते हैं, ''मृत्यु के बाद, पुनरुत्थान से पूर्व, आत्मा किस स्थिति में हैं? जो आत्मा देह से अलग होकर जा चुकी है, क्या वह होश में है या बेहोश है?'' बाइबल में इन प्रश्नों के भी सही उत्तर हमें मिलते हैं।

प्रभु यीशु द्वारा कहे गए धनवान तथा लाज़र के वर्णन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि शारीरिक मृत्यु के बाद भी आत्मा होश में रहती है। (लूका 16:19-31)। मृत्यु के बाद, देह से अलग होकर आत्मा विद्यमान रहती है- आनन्दमय स्वर्गलोक में या अधोलोक की पीड़ा में, अपने उस जीवन के आधार पर जो पृथ्वी पर उस व्यक्ति ने व्यतीत किया था। मरने के बाद वह धनवान ''पीड़ा में तड़प रहा था।'' न केवल उसे अपनी दुर्दशा का ही आभास था, परन्तु उसे अपने उन पाँच भाईयों का भी स्मरण था जो उस समय पृथ्वी पर थे, और उसकी इच्छा थी कि वे उस स्थान पर न आएं जहाँ उस समय वह था। पिता इब्राहीम ने उससे कहा था, कि यदि तू अपने उस जीवन को स्मरण करेगा जो तू ने पृथ्वी पर व्यतीत किया था तो तू इस बात को जान पाएगा कि अब तू क्यों इस पीड़ा में तड़प रहा है। फिर, हम पढ़ते हैं कि लाज़र की भी मृत्यु हुई थी, परन्तु उसे तत्काल आनन्द प्राप्त हुआ था, लिखा है, वह ''शांति पा रहा था।'' सो वह धनवान तथा लाज़र दोनों ही एक ऐसी स्थिति में थे जहाँ वे होश में थे। वहाँ वे दोनों अपने-अपने उस जीवन को स्मरण कर सकते थे जिसे उन्होंने पृथ्वी पर बिताया था।

जिन साधारण शब्दों का प्रभु यीशु ने इस वर्णन में उपयोग किया है उन्हें महत्वरहित ठहराने के दृष्टिकोण से कुछ लोग कहते हैं कि वह तो यीशु का केवल एक दृष्टान्त

है। किन्तु, अब चाहे वह दृष्टान्त है या इतिहास, या दोनों, पवित्रशास्त्र सत्य की शिक्षा देता है, झूठ की नहीं। इसे केवल एक दृष्टान्त कह देने से उन दोनों मनुष्यों के विषय में कही गई बातें झूठी नहीं ठहर जातीं। प्रभु के दृष्टान्त मात्र कहानी नहीं, परन्तु वास्तविक हैं। जीवन उपरान्त जिन दो स्थितियों का यहाँ प्रभु यीशु ने वर्णन किया है वे वास्तव में हैं, और उसने उनका एक बिल्कुल सही विवरण दिया है। यीशु ने कहा था, ''एक धनवान मनुष्य था।'' क्या वास्तव में था? फिर यीशु ने कहा था, ''लाज़र नाम का एक कंगाल था।'' क्या सच में था? क्या धनवान की मृत्यु हुई थी? क्या लाज़र मरा था? यीशु ने कहा था, हाँ। यीशु मसीह ने ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर अनेक उदाहरण दे-देकर लोगों के सामने आत्मिक सच्चाईयों को रखा था। प्रभु के विचाराधीन विवरण को मिथ्या एक कहानी मान लेना मूर्खता की बात है।

जबकि उक्त घटना में जो कुछ भी घटा था वह सब वास्तविक था, परन्तु मनुष्यों के समझने के लिये प्रभु ने कुछ बातों का वर्णन प्रतीकात्मक शब्दों में किया था। आत्मिक प्राणियों की अलग-अलग परिस्थितियों को दर्शाने के लिये यीशु ने कुछ ऐसे शब्दों का इस्तेमाल किया था, जिन से मनुष्य परिचित है। उस आत्मिक स्थान पर आग, पानी या गड़हा कदाचित वास्तव में विद्यमान न हों; परन्तु उनका वर्णन करके उनके द्वारा उन्हीं के समान कुछ वास्तविक तथा विशेष वस्तुओं को दर्शाया गया है। जिस आनन्द तथा पीड़ा को वे दो देह-रहित आत्माएं वहाँ अनुभव कर रही थीं वे वास्तविक थे यद्यपि उनका वर्णन प्रतीकात्मक भाषा में किया गया है।

धनवान तथा लाज़र के इस वर्णन से हम दो बड़ी ही विशेष बातें सीखते हैं: (1) मृत्यु का अर्थ मनुष्य के अस्तित्व का अन्त नहीं है; देह के नाश होने तथा मिट्टी में मिल जाने के उपरान्त भी आत्मा का अस्तित्व बना रहता है; (2) देह के अलग होने पर भी आत्माएं होश में रहती हैं- आनंद में या पीड़ा में, पृथ्वी पर व्यतीत किए गए जीवन के आधार पर। उन्हें अपने अस्तित्व का आभास रहता है तथा पृथ्वी पर व्यतीत किए गए जीवन का स्मरण भी रहता है इसलिये, बाइबल की शिक्षानुसार देह से अलग होकर भी आत्मा होश में रहती है।

पौलुस ने मृत्यु को हानि नहीं परन्तु लाभ कहा था। उसने कहा था, मृत्यु का अर्थ है, कूच करके मसीह के पास जाना, जिसे वह कहता है, ''बहुत ही अच्छा है।'' (फिलिप्पियों 1:23)। इस बात से यह नहीं समझ लेना चाहिए, कि पौलुस यहाँ यह कह रहा था कि वह पृथ्वी पर के उस जीवन की तुलना में, जिसमें प्रभु की सेवा करते हुए उसे आनन्द तथा दुख दोनों ही प्राप्त हो रहे थे, एक ऐसी जगह जाना चाहता था जहाँ वह हमेशा के लिए बेहोश रहेगा। (सदा के लिए मिट जाना तो और ही बात है।) परन्तु इस संसार में रहने के विपरीत, मृत्यु के पश्चात उस स्थान या स्थिति को ''बहुत ही अच्छा'' कैसे कहा जा सकता है? क्योंकि एक मसीही जन के लिये वास्तव में ''मर जाना लाभ है।'' (फिलिप्पियों 1:21)।

फिर, ऐसे ही, पौलुस का वह अनुभव जब वह ''तीसरे स्वर्ग तक'', ''स्वर्गलोक पर'' उठा लिया गया था, जैसे कि 2 कुरिन्थियों 12:2-4 में मिलता है, हमें स्पष्टता से बताता है कि देह के बाहर भी मनुष्य होश में रहता है। वास्तव में, पौलुस को इस बात का ज्ञान नहीं था कि उस समय वह देह में था या देह के बाहर था। यदि वह देह के बाहर था, तो वह अपने होश में था। किन्तु इस सम्बंध में जो बात यहाँ सच है वही बात प्रत्येक उस घटना में भी सच है जहाँ आत्मा शरीर से अलग वर्तमान है, अर्थात्

देह से अलग होकर आत्मा होश में निरन्तर विद्यमान रहती है।

ऐसे ही, हमें आरंभ के उन मसीही शहीदों के बारे में भी मिलता है, जो अपनी-अपनी देहों से अलग होकर जीवित तथा होश में रहकर न्याय के दिन की बाट जोह रहे थे। (प्रकाशित. 6:9-11)। धर्मी मृतकों को धन्य या आनन्दित कहा गया है, ''जो मुर्दे प्रभु में मरते हैं, वे सब धन्य हैं..... क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएंगे और उनके कार्य उनके साथ हो लेते हैं।'' (प्रकाशित. 14:13)। बेहोशी की स्थिति में कोई मनुष्य आनन्द का अनुभव नहीं कर सकता; तौभी बाइबल के अनुसार, जो प्रभु में मरते है वे धन्य हैं। यहाँ यह नहीं लिखा है, कि वे भविश्य में धन्य होंगे, परन्तु वे धन्य हैं, अर्थात् अभी।

अकसर सभोपदेशक 9:5 के द्वारा, जहाँ लिखा है, ''मरे हुए कुछ भी नहीं जानते,'' यह प्रमाणित करने का प्रयास किया जाता है, कि मृतक बेहोश हैं। लेकिन वहाँ अगले ही पद में लिखा है, ''सूर्य के नीचे।'' यहाँ इस वर्णन में विशेष रूप से इस बात को दर्शाया गया है, कि एक मरा हुआ मनुष्य ''सूर्य के नीचे'' अब जो कुछ हो रहा है उसे वह नहीं जानता, अर्थात् इस व्यस्त संसार में जिसमें वह एक समय जीवित था। मृत्यु के बाद, पृथ्वी पर मनुष्य के सब काम समाप्त हो जाते हैं। मृत्यु के बाद उसे कुछ पता नहीं रहता कि पृथ्वी पर क्या हो रहा है। लेकिन बाइबल में ऐसा कहीं कुछ नहीं लिखा हुआ है, कि मृत्यु पश्चात् आत्मा को कुछ भी होश नहीं रहता।

फिर, कुछ लोगों का मत है, कि ''आत्माएं सोती हैं'', अर्थात् मृत्यु के बाद आत्माएं बेहोशी की स्थिति में विद्यमान रहती हैं। क्योंकि बाइबल में कुछ स्थानों पर मृत्यु को ''सो जाना'' कहकर सम्बोधित किया गया है, (मरकुस 5:39, यूहन्ना 11:11; प्रेरितों 7:60; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-15) इसलिये इन पदों से अकसर यह दिखाने का प्रयास किया जाता है कि मृत्यु के बाद न्याय के दिन तक आत्माएं बेहोश रहेंगी। किन्तु, यहाँ 'सोना' शब्द का उपयोग शारीरिक मृत्यु के लिये हुआ है, उसका अभिप्राय देह से है, आत्मा से नहीं है। देहों के विषय में कहा गया है कि वे ''भूमि के नीचे'' सोती हैं, (दानिय्येल 12:2), ''कब्रों में'' (मत्ती 27:52, 53)। इसलिये, सीमेट्री या कब्र-स्थान जहाँ मुरदों को गाड़ा जाता है, यथार्थ में ''सोने का स्थान'' है, जहाँ मरी हुई देहें पुनरुत्थान के दिन तक रहेंगी। आत्माएं कब्रों में नहीं हैं। वे कहीं भी सो नहीं रही हैं; परन्तु वे होश में हैं, ''क्योंकि सब जीवित हैं'' (लूका 20:38), चाहे जीवित हों या मृतक। बाइबल में मृत्यु को ''सोना'' कहकर इसलिये सम्बोधित किया गया है, क्योंकि एक मरी हुई तथा एक सोई हुई देह के भीतर एक समानता सी लगती है। एक मरा हुआ व्यक्ति ऐसे लगता है जैसे वह सो रहा है। मृत्यु के समय देह मानो सो जाती है। परन्तु आत्मा कभी नहीं सोती। और, जिस प्रकार एक सोया हुआ व्यक्ति एक नए दिन के कामों में व्यस्त होने के लिये भोर को फिर-जाग उठता है, उसी प्रकार कब्रों के भीतर सोए हुए शरीर भी एक दिन एक नए जीवन के लिए जी उठेंगे।

आत्माओं के सोने का मत बाइबल की शिक्षा पर आधारित नहीं है। मृत्यु तथा पुनरुत्थान के बीच आत्माएं कई वर्षों तक बेहोशी की स्थिति में नहीं रहेंगी। बाइबल में "मृत्यु" को न तो आत्मा का "मिट जाना" कहा गया है, और न ही आत्मा का "बेहोश हो जाना" कहा गया है। परन्तु देह से अलग होकर आत्माएं जीवित तथा होश में रहती हैं।